International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(II), January - March, 2023, pp. 97-100

वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार की भूमिका

सुमन देवी शर्मा*

प्रस्तावना

शैक्षिक नवाचार शिक्षा की विकासोन्मुख रहने वाली प्रक्रिया को प्रदर्शित करने वाली एक नवीन अवधारणा है। नवाचार शब्द का प्रयोग वैज्ञानिक विकास के युग में शैक्षिक तकनीकी के नवीन प्रावधानों के कारण शैक्षिक नवाचार का महत्व बढ़ गया है। अन्तराष्ट्रीयता, वैश्वीकरण और जनसंचार के आधुनिक संसाधनों ने इसे आज के युग की एक आवश्यकता के रूप में स्थापित कर दिया है। नवाचार परिवर्तन तक सीमित नहीं होते। समाज में भी प्रतिक्षण परिवर्तन हो रहा है। पुरानी मान्यताओं के स्थान पर नवीन मान्यताएँ जन्म ले रही है। पुरातन विचार जा रहे है नूतन विचार आ रहे है। जल स्थिर रहेगा तो सड़ेगा ही। जल का प्रभाव जारी रहेगा अर्थात पुराने जल का स्थान नया जल लेता रहेगा तो जल शुद्ध रहेगा। इसी प्रकार जो समाज स्थिर यथावत स्थिति में बना रहना चाहता है। नवीन विचारों को ग्रहण नहीं करता वह जीवित नही रह सकता है। नये–नये विचारों को ग्रहण करने से समाज को नया जीवन प्राप्त होता है। उसी प्रकार अपेक्षित परिवर्तनों से शिक्षा में नवीन चेतना आती है। नयी स्फूर्ति आती है। ये परिवर्तन शिक्षा में नवीनता लाते है और शिक्षा आगे की और बढ़ती है। शिक्षा प्रगति पथ पर अग्रसर होती है।

शिक्षा में नवाचार

प्रत्येक वस्तु या क्रिया में परिवर्तन प्रकृति का नियम है। परिवर्तन से ही विकास के चरण आगे बढ़ते है। परिवर्तन एक जीवन्त, गतिशील और आवश्यक क्रिया है, जो समाज को वर्तमान व्यवस्था के अनुकुल बनाती है। परिवर्तन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होते हैं इन्हीं परिवर्तनों से व्यक्ति और समाज को स्फूर्ति, चेतना, ऊर्जा एवं नवीनता की उपलब्धि होती है।

कहा गया है:–

Change is variation from a previous state or mode of existence.

परिवर्तन अच्छा है या बुरा इस संबंध में शिक्षाविद् किल पैट्रिक की स्पष्ट अवधारणा है– "परिवर्तन विचारधीन बात का पूर्ण या आंशिक परिवर्तन है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि परिवर्तन अच्छी बात के लिए है या बुरी बात के लिए।"

इस प्रकार परिवर्तन की प्रक्रिया विकासवादी, संतुलनात्मक एवं नव गत्यात्मक परिवर्तन से जुड़ी होती है।

परिवर्तन समाज की माँग की स्वाभविक प्रक्रिया से जुड़ा तथ्य है। इसलिए परिवर्तन नवाचार और शिक्षा का आपसी सम्बन्ध स्पष्ट है–

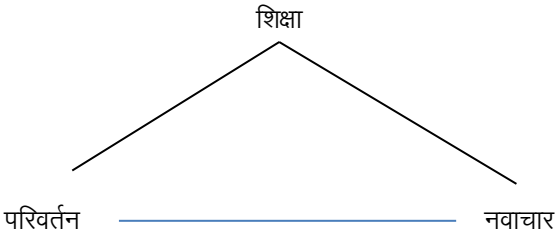

नवाचार कोई नया कार्य करना मात्र नहीं वरन् किसी भी कार्य को नये तरीके से करना ही नवाचार है।

* सहायक आचार्य, एस.एस.जी. पारीक स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

नवाचार अर्थ

नवाचार दो शब्दों नव और आचार के योग से बना है। नव का अर्थ नवीन या नया आचार का अर्थ व्यवहार या रहन–सहन।

अतः नवाचार वह परिवर्तन है जो पूर्व–स्थित विधियों और पदार्थों आदि में नवीनता का संचार करें।

इनोवेशन ;प्ददवअंजपवदद्ध आंग्ल भाषा का शब्द है यह शब्द इनोवेट ;प्ददवअंजमद्ध से निर्मित हुआ है जिसका अर्थ है ज्व पदजतवकनबम (नवीनता लाना) था ज्व उंाम बींदहमे (परिवर्तन लाना)

इस प्रकार प्ददवअंजपवद शब्द का अर्थ हुआ– "वह परिवर्तन जो नवीनता लाए।"

परिभाषा

रोजर्स ई.एम. के अनुसार– "नवाचार वह विचार है जिसकी प्रतीति व्यक्ति नवीन विचार के रूप में करें।"

माइलैक्स एम.बी. अनुसार– "नवाचार वह नवीन और विशेष परिवर्तन है जो समझ–बूझकर किया गया है। उद्देश्य प्राप्ति की दृष्टि से यह परिवर्तन अन्य विधियों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली समझा जाता है।"

नवाचार की विशेषताएँ

- नवाचार एक ऐसा विचार है जिसे नया समझा जाता है।
- नवाचार में कोई न कोई विशेषता अवश्य पायी जाती है।
- नवाचार प्रयासपूर्ण किया जाने वाला कार्य है।
- नवाचार को समझ–बूझकर काम में लाया जाता है।
- नवाचार के द्वारा परिस्थितियों में सुधार लाने का प्रयास किया जाता है।
- प्रचलित विधियों की अपेक्षा गुणों को ध्यान में रखते हुए नवाचार अधिक श्रेष्ठ अथवा उन्नत माना जाता है।
- नवाचार वह विचार है जिसके मानने या स्वीकार करने वाला उसे नवीन विचार के रूप में देखता और अनुभव करता है।

शिक्षा के नवाचार की आवश्यकता एवं महत्व

- शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए नवाचार जरूरी है।
- सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा के नवाचार आवश्यक है।
- लोगों के आर्थिक विकास के लिए शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता है।
- रूचि पूर्ण शिक्षा के लिए नवाचार होना आवश्यक है।
- शिक्षक में सकारात्मक व्यवहार लाने के लिए नवाचार जरूरी है।
- कल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिए
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के अनुरूप शिक्षा प्रणाली
- मानव संसाधन का विकास करने हेतु
- रोजगार के अवसरों में वृद्धि हेतु
- पर्यावरण प्रदूषण जनित समस्याओं के समाधान हेतु
- विशिष्टीकरण की वृद्धि एवं इससे उत्पन्न समस्याओं की पूर्ति हेतु

नवाचार का शिक्षा पर प्रभाव

व्यक्ति एवं समाज में हो रहे परिवर्तनों का प्रभाव शिक्षा पर भी पड़ा है। शिक्षा को समयानुकुल बनाने के लिए शैक्षिक क्रियाकलापों नूतन प्रवृत्तियों ने अपनी उपयोगिता स्वयं सिद्ध कर दी है।

ट्रायसेन के अनुसार

"शैक्षिक नवाचारों का उद्‌भव स्वतः नहीं होता वरन् इन्हें खोजना पड़ता है तथा सुनियोजित ढ़ग से इन्हें प्रयोग में लाना होता है, ताकि शैक्षिक कार्यक्रमों को परिवर्तित परिवेश में गति मिल सके और परिवर्तन के साथ गहरा तारतम्य बनाऐ रख सकें।"

इस प्रकार नवाचार एक विचार है, एक व्यवहार है अथवा वस्तु है जो नवीन और गुणात्मक का स्वरूप है।

नवाचार के प्रमुख पद– नवाचार के प्रमुखतः निम्नलिखित पद निर्धारित किये जा सकते है–

- खोज या शोध
- परीक्षण
- मूल्यांकन
- विकास
- विस्तार या फैलाव
- उपयोग हेतु स्वीकार करना

शैक्षिक नवाचार के आधार

नवाचार की परिस्थितियाँ हर क्षेत्र में अलग–अलग अर्थ बताती है। इनके प्रयोग करने के तरीके भी अलग–अलग होते है।

प्रो. उदय पारीक और टी.पी. राव नवाचार को बड़ी सरलता से परिभाषित करते है–

"किसी उपयोगी कार्य के लिए किसी व्यक्ति या निकाय के द्वारा किया गया विचार अथवा अभ्यास नवाचार कहलाता है।"

सभी कार्य ऐसे है जो पहले कहीं ना कही किसी के द्वारा पूर्व में किए जा चुके है। पर आपने पूर्व के किए कार्य को यदि अपनी नई रचनात्मक शैली प्रदान की है तो यही प्रयास नवाचार बन जाता है।

नवाचार को दो कोटियों में रखा जा सकता है–

- **सामाजिक अन्तःक्रियात्मक नवाचार–** इसके अन्तर्गत किसी संस्था या उसके मानवीय समूह से वार्ता करके जब कुछ नया करते है तो वह सामाजिक अन्तः क्रियात्मक नवाचार कहलाता है। इसमें कार्य के गुण दोष दोनों देखे जाते है विशेषताओं की जानकारी एवं उपयोगी विचार अपना लिए जाते है।
- **समस्या संबंधी नवाचार–** वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में आ रही समस्याओं के निराकरण के लिए नए तरीके खोजकर उस समस्या का समाधान कर दिया जाए, तो यह समस्या सम्बन्धी नवाचार कहलाता है नवाचार शिक्षक पद्धतियों का सम्बन्ध इसी समस्या समाधान (अधिगम की समस्या समाधान) सम्बन्धी नवाचार से है।

नवाचार शिक्षण पद्धतियाँ

वर्तमान समय में शिक्षा पूर्णतया निःशुल्क एवं बाल केन्द्रित है। हमारी सरकार के द्वारा विद्यालय को सभी भौतिक सुविधायें उपलब्ध करायी जा चुकी है जैसे– विद्यालय भवन, विद्युत व्यवस्था, पाठ्यपुस्तकें, स्कूल यूनिफार्म, मध्यान्ह भोजन, छात्रवृत्ति, शिक्षण अधिगम सामग्री के लिए धनराशि आदि।

यह सत्य है कि सभी सुविधाओं से विद्यालयों में छात्र नामांकन संख्या में वृद्धि हुई है। परन्तु गुणात्मक शिक्षा में अभी भी आशानुरूप सफलता नहीं मिली है। जहाँ संख्यात्मक वृद्धि होती है वहाँ गुणात्मक वृद्धि में कमी आ जाती है। इस कमी को दूर करने के लिए आवश्यक है कि कक्षा में रूचिपूर्ण पद्धति अपनाई जाए जैसे– भ्रमण विधि खेल विधि, कहानी विधि, प्रदर्शन विधि, करके सीखना, प्रोजेक्ट विधि, केस स्टडी विधि तथा विभिन्न प्रकार की अन्य शैक्षिक गतिविधियाँ आदि।

इन नवाचारी शिक्षण पद्धतियों से शिक्षण कार्य करने में अध्यापक एवं विद्यालयों दोनों के लिए ही शिक्षण अधिगम एक रूचिपूर्ण प्रक्रिया बन सकेगी। इन पद्धतियों के माध्यम से शिक्षण कार्य सरल व सुगम ही नहीं बनता बल्कि विद्यार्थी की रूचि भी जागृत होती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के प्रमुख उद्देश्य है कि बच्चों के पुस्तकीय ज्ञान को उनके बाहरी ज्ञान से जोड़ा जाये, यह उद्देश्य भी इन पद्धतियों से प्राप्त हो सकेगा। भयमुक्त वातावरण में विद्यार्थी स्वतंत्र होकर अपना कार्य सुगमता से कर सकता है।

नवाचारी शिक्षण पद्धतियों से कोशल विकास

- अभिव्यक्ति का विकास
- अन्वेषण
- निर्णय लेने की क्षमता का विकास
- स्वं मूल्यांकन करने की क्षमता
- सृजनात्मक का विकास
- रचनात्मक विकास
- आत्म विश्वास

संक्षेप में कहा जा सकता है कि नवाचार शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से बच्चों का सर्वांगीण विकास तो होगा ही साथ ही उनका सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन भी हो सकेगा।

नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ

नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ निम्न है–

- प्रोजेक्ट विधि
- केस स्टडी
- क्षेत्रीय पर्यटन
- मानसिक उद्योंलन
- पात्र अभिनय
- प्रदर्शन विधि
- खेल विधि

निष्कर्ष

बालक अपने नवीन ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है इसका निहितार्थ है कि पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें शिक्षक को इस बात के लिए सक्षम बनाये कि बच्चों की प्रकृति और वातावरण के अनुरूप विद्यालय में गतिविधि एवं अनुभव आधारित कार्यक्रम आयोजित करें ताकि सभी बच्चों को विकास के अवसर मिल सकें। सक्रिय गतिविधि के जरिये बच्चे अपने आसपास की दुनिया को समझने की कोशिश करते है इसलिए प्रत्येक साधन का उपयोग इस प्रकार किया जाना चाहिए कि बच्चे को स्वयं को अभिव्यक्त करने में और स्वस्थ रूप से विकसित होने में मदद मिलें। इन इवाचारी शिक्षण पद्धतियों के प्रयोग से बच्चों को चहुमुखी विकास के अवसर प्राप्त हो सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, डॉ. संध्या – 'शिक्षा मनोविज्ञान' प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी, संस्करण– 2004.
2. अस्थाना, डॉ. विपिन 2007–2008 – 'मनोविज्ञान शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन', अग्रवकाल पब्लिकेशन्स
3. भटनागर, डॉ. ए.बी. एवं मीनाक्षी– 'मनोविज्ञान शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन', आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
4. भटनागर, सुरेश – 'शिक्षा अनुसंधान' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा लॉयल बुक डिपो, मेरठ, 1998
5. ढ़ाढियाल एवं पाठक– 'शैक्षिक अनुसंधान' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1989.
6. सिडाना, अशोक एवं महरोत्रा, पी.एन. 2007– 'सामाजिक अध्ययन शिक्षण'
7. पाठक, पी.डी. – 'शिक्षा मनोविज्ञान', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1983.

❖◆❖